PAGE NO.: _____
DATE: / /

DEMONSTRATION METHOD.

- प्रदर्शन विधि -

महत्व - प्रदर्शन विधि शिक्षण की एक अत्यन्त प्रभावी विधि है। इसके माध्यम से विषय वस्तु को विद्यार्थियों के समक्ष दृश्यात्मक एवं श्रव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य विद्यार्थी सुनने की अपेक्षा 'देखकर' ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से ग्रहण करता है। परन्तु अध्यापक में इन दोनों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाय तो शिक्षण को अपेक्षाकृत अधिक स्थायी प्रभाव पड़ता है तथा विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न होती है। इसके परिणामस्वरूप उनमें प्रदर्शित कार्य के कौशल को सीखने में सहायता मिलती है तथा उस कार्य के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण एवं अभिवृत्ति का निर्माण होता है। गृह-विज्ञान के शिक्षण में इस विधि का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी है।

स्वरूप - इस विधि के अनुसार शिक्षिका के पास प्रदर्शन के निमित्त समस्त उपयोगी उपकरण एवं सामग्री कक्षा में प्रदर्शन के समय से पहले ही एकत्रित रहती है। इसका प्रयोग करके शिक्षिका एक नियमित स्थान से समस्त प्रदर्शन को समस्त छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

छात्राएँ अपने स्थान पर बैठे-बैठे उसका निरीक्षण करती हैं। जो प्रयोग शिक्षिका द्वारा छात्राओं के हित के लिए किया जाता है उसे प्रदर्शन कहते हैं। कुछ प्रयोगों में यत्र तत्र छात्राओं की सहायता भी ले ली जाती है। यह विधि प्रयोग विधि की सहायक और भाषण विधि से भिन्न है। भाषण विधि में शिक्षिका प्रयोगों का केवल वर्णन ही करती है परन्तु इसमें सब वस्तुओं और क्रियाओं को छात्राएँ प्रत्यक्ष रूप में सम्पन्न होते हुए देख लेती हैं। प्रथम में केवल शिक्षिका ही क्रियाशील रहती हैं और छात्राएँ श्रोता के रूप में रहती हैं। परन्तु द्वितीय में छात्राओं और शिक्षिका के मध्य निरन्तर प्रश्नोत्तर द्वारा विचारों का आदान-प्रदान होता रहता है और दोनों क्रियाशील रहती हैं।

प्रदर्शन विधि निम्नलिखित अवसरों पर उपयुक्त है—

I- जब एक ही कक्षा में कई प्रयोगों को दिखाकर कोई निष्कर्ष निकालना हो, जैसे- वायु के संगठन और विभिन्न गैसों को बनाने के लिए शिक्षिका एक साथ कई प्रयोग दिखाये।

II- जब पूर्ण कक्षा के लिए या समूह के लिए पर्याप्त उपकरण न हो

III- जब छात्राओं द्वारा प्रयोग करने के लिए स्थान का अभाव हो।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

PAGE NO.:
DATE: / /

iv- जब छात्राओं द्वारा प्रयोग करने में किसी प्रकार का प्रयोगकर्ता के जीवन को खतरा हो, जैसे- गृह-सम्बन्धी बिजली के उपकरणों की मरम्मत करना या गरसीन के साथ कभी -चर, क्रीम तैयार करना।

प्रदर्शन पद्धति का प्रयोग करने वाली शिक्षिका

प्रदर्शन पद्धति गृह-विज्ञान शिक्षण की एक उत्तम पद्धति है। परन्तु इसकी उपयोगिता का लाभ तभी प्राप्त हो सकता है जबकि इसका प्रयोग करने वाली शिक्षिका योग्य एवं कुशल हो। यह तो स्पष्ट ही है कि इस पद्धति की सफलता में शिक्षिका का वाक-चातुर्य एवं कार्य निष्पादन कुशलता का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। विषय की सामान्य शिक्षिका की अपेक्षा प्रदर्शन पद्धति का प्रयोग करने वाली शिक्षिका में विशेष गुणों एवं क्षमताओं का होना आवश्यक होता है। ये गुण निम्न-लिखित हैं—

I- स्वच्छता एवं सादगी — शिक्षिका को स्वच्छता एवं सादगी की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

II- उपयुक्त पोशाक — प्रदर्शन की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए शिक्षिका को उपयुक्त पोशाक पहननी चाहिए। वैसे किसी भी रंग की पोशाक पहनी जा सकती है, परन्तु सफेद पोशाक पहनना उपयुक्त होता है।

PAGE NO.: _____
DATE: / /

3- मृदुभाषिता - शिक्षिका को प्रदर्शन के मध्य टिप्पणी, प्रवचन, कथन, उदाहरण आदि का प्रयोग करना आवश्यक होता है। यदि ऐसा न किया जाय तो प्रदर्शन निर्जीव एवं निष्क्रिय प्रतीत होगा। यही कारण है कि कुछ शिक्षाशास्त्री इसे भाषण-व प्रदर्शन की संज्ञा देते हैं। शिक्षिका को मन्द, मृदुल एवं आरोह अवरोहपूर्ण आकर्षक स्वर में कक्षा में बोलना चाहिए।

4- सक्रियता एवं प्रसन्न मुद्रा - शिक्षिका को कक्षा में सक्रिय एवं प्रसन्न मुद्रा में रहना चाहिए। उसके मुख पर आत्मीयता-पूर्ण, मुस्कराहट, मोहक स्वभाव, तत्परता होने से छात्राओं का विश्वास, सक्रिय सहयोग, एवं उनका अवधान प्राप्त करने में अत्यन्त सहायता मिलती है।

5- उपयुक्त आसन - शिक्षिका को कक्षा में अपने खड़े होने, कार्य करने, झुकने आदि के आसनों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। कक्षा में चलते, मेज पर कार्य करते समय शिक्षिका को सीधे खड़े होना चाहिए।

26/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

PAGE NO.:
DATE: / /

उत्तम प्रदर्शन की पूर्व आवश्यकतायें

एक रोचक एवं सफल प्रदर्शन प्रस्तुत करने के लिए शिक्षक को कुछ मूलभूत पूर्व आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखना आवश्यक है, वे हैं—

1- प्रदर्शित की जाने वाली वस्तु तथा उसे प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का पूर्व ज्ञान।
2- किये जाने वाले कार्य के लिए सर्वोत्तम सम्भव उपकरण के महत्व को स्वीकार करना
3- उपकरण, कार्यक्रम तथा समय की एक सुनिश्चित एवं प्रभावी योजना का निर्माण
4- प्रदर्शन की पूर्व तैयारी।
5- तैयार वस्तु का सुनियोजित प्रदर्शन।
6- छात्रों का विश्लेषण

पूर्व ज्ञान – सम्बन्धित विषय का शिक्षक को असीमित ज्ञान होना चाहिए तथा उस ज्ञान को आवश्यकतानुसार प्रयुक्त करने की पर्याप्त क्षमता होनी चाहिए। किसी कार्य अथवा विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उससे सम्बन्धित विस्तृत ज्ञान आवश्यक होता है। प्रदर्शन प्रस्तुत करने से पूर्व शिक्षक को निम्नानुसार पूर्व योजना बना लेनी चाहिए—

A- प्रस्तावना – इसके अन्तर्गत तीन बिन्दुओं की ओर ध्यान देना चाहिए—

1- छात्रों का ध्यान आकर्षित करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

PAGE NO.:
DATE: / /

ii- छात्राओं को जो कुछ प्रदर्शित किया जाय व बताया जाय उसको, देखने, सुनने व ग्रहण करने के लिए तैयार करना।

iii- प्रमुख उद्देश्य का प्रस्तुतीकरण।

B- प्रदर्शन की प्रक्रिया- प्रदर्शन की अवधि तथा संगठन छात्राओं की प्रत्याशित प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करेगें।

i- विषय को समझना,

ii- उसे स्वीकार करना,

iii- व तद्नुसार कार्य करना।

उक्त तीनों को प्रायः संयुक्त कर लिया जाता है।

प्रदर्शन स्पष्ट रूप से सुसंगठित होना चाहिए।

C- निष्कर्ष- प्रमुख शीर्षकों के सारांश तैयार किये जाये।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया
26/09/20